तुलसी के काव्य में राम की भक्ति के अलावा भी बहुत कुछ है

(गोस्वामी तुलसीदास जयंती विशेष 27-7-20)

जनमानस में गोस्वामी तुलसीदास जी को लेकर आम धारणा यही है कि वे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की भक्ति में आकंठ डूबे एक ऐसे कवि थे जिन्होंने जन-जन में सर्वाधिक लोकप्रिय राम चरित मानस,हनुमान चालीसा, विनय पत्रिका,जानकी मंगल सहित कई धार्मिक साहित्य की रचना की। वस्तुत: यह सही है, फिर भी गोस्वामी तुलसीदास जी के संपूर्ण सृजन का सही आकलन नही कहला सकता। भक्ति काल के अग्रगण्य कवि गोस्वामी तुलसीदास जी ने इन्ही पौराणिक सृजनात्मक गतिविधियों में कई ऐसे दोहे, सोरठे,चौपाई छंद इत्यादि रचे हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि वे सामाजिक सरोकार, राजनीति, ज्योतिष शास्त्र, सहित अन्य विषयों पर भी गहरी पकड़ रखते थे।

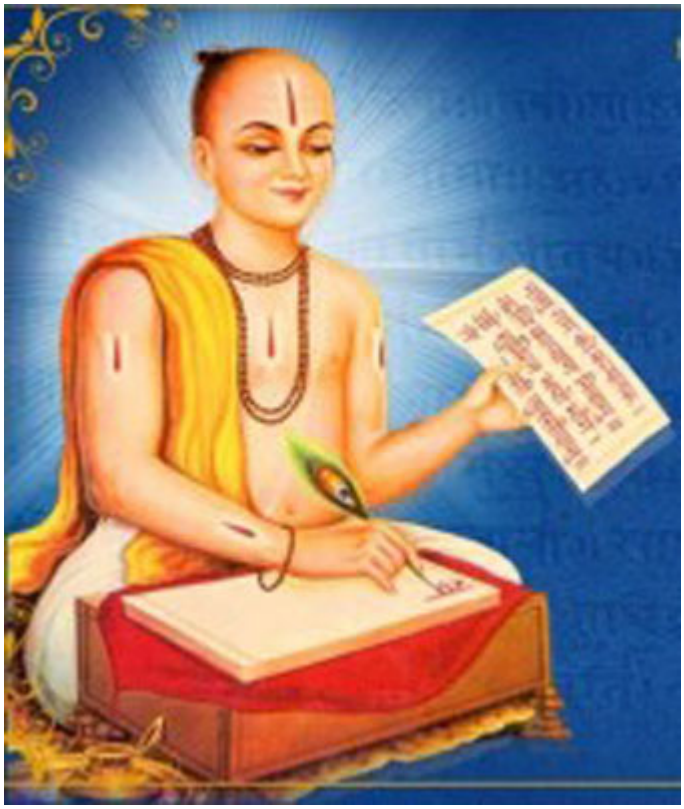

“समरथ को नहिं दोष गुसाईं” या “सठ सन विनय कुटिल संग प्रीति” जैसी चौपाइयाँ या “सचिव बैद गुरु

तीन जो,प्रिय बोलहिं भय आस।" जैसा दोहा जनमानस में लोकप्रिय भी है और उदाहरण स्वरूप बोला भी जाता है। परंतु गोस्वामी जी के कृतित्व पर वृहद् मुल्यांकन के लिए कुछ ऐसे उदाहरण प्रस्तुत करना प्रासंगिक होगा जिससे यह बात सिद्ध हो सके कि उनके रचनाकर्म का आभामंडल कितना विशाल है।

गृह नक्षत्रों के बारे में कितना गहरा अध्ययन गोस्वामी जी ने किया होगा इसकी बानगी प्रस्तुत है। कौन से नक्षत्र व्यापार के लिए शुभ होते हैं, इसे मात्र एक दोहे में प्रस्तुत कर देना, यह तुलसीदास जी जैसे विलक्षण प्रतिभाशाली कवि ही कर सकते थे। दोहा देखें-

"श्रुति गुन कर गुन पु जुग मृग,हय रेवती सखाउ।

देहि लेहि धन धरनि धरु,गएहुँ न जाइहि काउ।।"

अर्थात – श्रवण नक्षत्र से तीन नक्षत्र,(श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष) हस्त नक्षत्र से तीन नक्षत्र, (हस्त,चित्रा,स्वाती) पु से आरंभ होने वाले दो नक्षत्र, (पुष्य,पुनर्वसु) इसके अलावा मृगशिरा, अश्विनी, रेवती तथा अनुराधा। इन बारह नक्षत्रों में जर, ज़मीन, स्थाई संपत्ति का लेनदेन करने से कभी नुकसान नहीं होगा, अपितु धन जाता हुआ प्रतीत होने पर भी नहीं जाएगा। ठीक इसी प्रकार कौन से नक्षत्र में गया हुआ धन वापस नहीं आता, इस बारे में भी केवल एक दोहे में समझाया है गोस्वामी जी ने...प्रस्तुत है-

"ऊगुन पूगुन बि अज कृ म,आ भ अ मू गुनु साथ।
हरो धरो गाड़ो दियो,धन फिरि चढ़इ न हाथ।।"

मतलब – 'उ' से आरंभ होने वाले तीन नक्षत्र (उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद) 'पू' से आरंभ होने वाले तीन नक्षत्र (पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद) विशाखा, रोहिणी, कृतिका, मघा, आर्द्रा, भरणी, अश्लेषा तथा मूल नक्षत्र में चोरी गया हुआ, गिरवी रखा हुआ, ज़मीन में गाड़ा हुआ एवं उधार दिया हुआ धन वापस नहीं आता।

जरूरी नहीं कि यह बात पूर्ण सत्य हो, अपवाद हर जगह मौजूद होता है यहाँ भी होगा। ऐसा हमारा मानना है। खैर...

किस राशि के लिए कौन-सा चन्द्रमा घातक होता है, इस बात को बड़ी विद्वता से मात्र एक दोहे में तुलसीदास जी ने समेटा है, देखिए –

"ससि सर नव दुइ छ दस गुन,मुनि फल बसु हर भानु।

मेषादिक क्रम तें गनहि, घात चंद्र जियँ जानु।।"

भावार्थ यह कि – 'मेष राशि' के प्रथम, 'वृषभ' के पाँचवे, 'मिथुन' के नवें, 'कर्क' के दूसरे, 'सिंह' के छठे, 'कन्या' के दसवें,'तुला' के तीसरे, 'वृश्चिक' के सातवें,'धनु' के चौथे,'मकर' के आठवें,'कुम्भ' के ग्यारहवें और 'मीन' राशि के बारहवें चन्द्रमा पड़ जाए तो उसे घातक समझो।

आइए, इस दोहे का गूढ़ार्थ समझते हैं। चूंकि किसी भी छंद का अपना एक विधान होता है, यहाँ बात दोहे में कही गई है अत: अड़तालीस मात्राओं में अन्य नियमों का पालन करते हुए पूरी बात कहने के लिए तुलसीदास जी ने संकेतों में जिस कुशलता से कहा है, ऐसा कहना अत्यंत दुर्लभ एवं प्रणम्य है। जैसे चन्द्रमा एक है तो जैसा कि दोहे में कहा गया है – "मेषादिक क्रम तें गनहि" यानी 'मेष राशि' से शुरू करते हुए क्रम से, अर्थात 'मेष राशि' में पहला चन्द्रमा घातक होता है, ठीक इसी प्रकार 'वृषभ'- सर, यानी बाण, अर्थात पाँचवा चन्द्रमा घातक। उल्लेखनीय है कि कामदेव के पाँच बाण होते हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं- नीलकमल, मल्लिका,आम्रमौर, चम्पक और शिरीष कुसुम। इसी क्रम में 'मिथुन'- नव यानी नवा या नवम,'कर्क'-दुइ , यानी कर्क राशि का दूसरा चन्द्रमा घातक, 'सिंह' – छ (छठवाँ), 'कन्या' – दस (दसवाँ), 'तुला'-गुन (तीसरा) गुण तीन होते हैं- सत, रज, तम, 'वृश्चिक'-मुनि (सातवाँ) मुनि सात माने गए हैं-सप्तर्षि। इसके बाद 'धनु'-फल (चौथा)फल चार माने गए हैं- धर्म,अर्थ, काम, मोक्ष। फिर 'मकर'-वसु (आठवाँ) वसु आठ माने गए हैं। मकर के बाद 'कुम्भ'- हर (ग्यारहवाँ) हर अर्थात् रुद्र,जो ग्यारह माने जाते हैं। और अंत में 'मीन'-भानु (बारहवाँ) सूर्य है।

ऐसे कई उदाहरण हैं जो दिए जा सकते हैं। जैसे, किस प्रकार के सेवक और मित्र रखना चाहिए और कब त्याग करना चाहिए-

"लकड़ी डौआ करछुली,सरस काज अनुहारि।
सुप्रभु संग्रहहिं परिहरहिं,सेवक सखा बिचारि।।"

अर्थात- कहीं लकड़ी के चम्मच से काम लिया जाता है, तो कहीं उसको छोड़ कर धातु की करछुली उपयोग में लाई जाती है, ठीक उसी प्रकार समझदार आदमी भी जरूरत के मुताबिक काम आने योग्य कर्मचारी और मित्रों का संग करता है और उन्हे रखता है।

देश का मुखिया कैसा होना चाहिए, इस बारे में कितनी सुंदर बात कही है-

"मुखिआ मुख सो चाहिऐ,खान पान कहुँ एक।
पालइ पोषइ सकल अँग,तुलसी सहित बिबेक।।

आशय- देश के मुखिया को मुख के समान होना चाहिए, जो खाने पीने के लिए तो एक है, परंतु विवेक से समस्त अंगों का पालन पोषण करता है।

गोस्वामी तुलसीदास जी के कृतित्व पर अभी बहुत कुछ लिखा जा सकता है,स्थिति यह है कि "जिन खोजा तिन पाइया", आप उनके साहित्य का जितना गहराई से अध्ययन करेंगे, उतना नित नए ज्ञान कोष से परिपूर्ण होते जाएँगे।

कमलेश व्यास 'कमल'
पता- 20 /7, कांकरिया परिसर, अंकपात मार्ग उज्जैन, पिन 456006
मोबाइल- 8770948951